डॉ. अश्वनी कुमार, भा.व.से., *महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्* का हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला के दौरे सम्बंधितरिपोर्ट

भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद् , देहरादून के महानिदेशक, **डॉ. अश्वनी कुमार, भा.व.से.,** ने दिनांक 22 से 24 सितम्बर 2015 तक हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला का दौरा किया । हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला के निदेशक, डॉ. वी. पी. तिवारी ने **डॉ. अश्वनी कुमार** का स्वागत किया तथा आशा प्रकट की उनकी इस यात्रा से हिमाचल प्रदेश में हो रहे वानिकी अनुसन्धान को प्रदेश में नई दिशा मिलेगी । अपने स्वागत भाषण में डॉ. वी. पी. तिवारी ने संस्थान द्वारा चलाई जा रही विभिन्न अनुसन्धान परियोजनाओं तथा अन्य संस्थान से सम्बंधित विकासात्मक गतिविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी तथा महानिदेशक महोदय को अवगत करवाया कि परिषद् की वर्तमान वित्तीय स्थिति को देखते हुए संस्थान द्वारा अनुसन्धान परियोजनाओं हेतु बाह्य वित्तीय सहयता प्राप्त करने के भरसक प्रयास किये जा रहें तथा संस्थान इस मकसद में काफी हद तक सफल भी हुआ है ।

अपनी इस छोटी परन्तु महत्वपूर्ण यात्रा के के दौरान **डॉ. अश्वनी कुमार** नें दिनांक 23 सितम्बर 2015 को हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान का निरिक्षण किया तथा संस्थान द्वारा वानिकी के क्षेत्र में चलाई जा रही विभिन्न अनुसन्धान परियोजनाओं का अवलोकन भी किया ।

हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला के वैज्ञानिकों, अधिकारियों तथा कर्मचारियों से रूबरू होते हुए **डॉ. अश्वनी कुमार,** ने कहा कि परिषद् में कार्यरत सभी वैज्ञानिकों का कर्तव्य है कि हम ऐसी अनुसन्धान परियोजनाये बनायें जो सीधे तौर पर हितधारकों से सम्बंधित हो, वैज्ञानिक केवल मात्र अपनी अकादमिक रुचि की परियोजनाओं पर ही अपना ध्यान केन्द्रित न करें, क्योंकि सरकारी कर्मचारी होने के नाते असल में हमारा प्रत्येक कार्य व्यापक जनहित एवं देश हित में ही होना चाहिए I महानिदेशक महोदय ने अवगत करवाया कि परिषद में वर्तमान वित्तीय संकट को सुधारने की दिशा में भरसक प्रयास किये जा रहें है तथा उन्हें पूर्ण आशा ही नहीं अपितु विश्वास भी है कि इस दिशा में उन्हें जल्द ही सफलता भी मिलेगी I

महानिदेशक महोदय ने परिषद की कार्यप्रणाली से सम्बंधित विषय पर चर्चा करते हुए कहा कि पिछले कुछ समय में उन्होंने मानव संसाधन विकास से सम्बंधित मुद्दे, चाहे वह वैज्ञानिकों के नियत तिथि से पदोन्नति के बारे हो या ग्रुप –बी., सी व डी. की पदोन्नति के बारे में हो, इत्यादि मुद्दों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है |I उन्होंने आगे बताया कि परिषद् के तकनीकी स्टाफ के वेतनमान का मुद्दा समय-समय पर सम्बंधित मंत्रालयों से भी उठाया जा रहा है और आशा प्रकट कि समय आने पर इस विषय पर उचित निर्णय ले होगा I उन्होंने अपने स्तर पर संस्थान को हर भरसक सहायता प्रदान करने का आशवासन दिया तथा संस्थान के सभी अधिकारीयों तथा कर्मचारियों को व्यापक जनहित एवं देश हित में कार्य करने के लिए प्रेरित किया I

इसी दिन महानिदेशक महोदय नें शिमला कैचमेंट फारेस्ट तथा हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान के क्षेत्रीय अनुसन्धान केन्द्र, शिल्लारू का दौरा भी किया तथा इस केंद्र में चलाई जा रही विभिन्न अनुसन्धान परियोजनाओं का अवलोकन तथा निरिक्षण भी किया ।महानिदेशक महोदय ने अनुसन्धान परियोजनाओं पर अपनी गहन रूचि दिखाई तथा विभिन्न तकनीकी पहलुओं पर महत्वपूर्ण जानकारी हासिल भी की ॥

दिनांक 24 सितम्बर 2015 को **डॉ. अश्वनी कुमार** नें हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान द्वारा स्थापित किये गए निर्वचन केंद्र का लोकार्पण किया ।अपने संबोधन में महानिदेशक महोदय ने कहा कि इस केंद्र के माध्यम से *भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्* तथा हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान द्वारा वानिकी अनुसन्धान के क्षेत्र में किये गए विभिन्न अनुसन्धान कार्यों तथा इन से सम्बंधित प्रकाशनों को हितधारकों के लाभ के लिए प्रदर्शित किया जायेगा ।।इस अवसर पर हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी तथा आस-पास के गाँव के प्रगतिशील किसान भी उपस्थित रहे ॥

डॉ. अश्वनी कुमार ने कहा कि भारत में वानिकी एक प्रमुख ग्रामीण आर्थिक क्रिया , जनजातीय लोगों के जीवन से जुड़ा एक महत्वपूर्ण पहलू है और एक ज्वलंत पर्यावरणीय और सामाजिक-राजनैतिक मुद्दा होने के साथ ही पर्यावरणीय प्रबंधन और धारणीय विकास हेतु अवसर उपलब्ध करने वाला क्षेत्र भी है। आर्थिक योगदान के अलावा वन संसाधनों का महत्व इसलिए भी है कि ये हमें बहुत से प्राकृतिक सुविधाएँ प्रदान करते हैं जिनके लिये हम कोई मूल्य नहीं देते और इसीलिए इन्हें गणना में नहीं रखते। उदाहरण के लिये हवा को शुद्ध करना और सांस लेने योग्य बनाना एक ऐसी प्राकृतिक सेवा है जो वन हमें मुफ़्त उपलब्ध क राते हैं और इसका कोई कृत्रिम विकल्प भी इतनी बड़ी जनसंख्या के लिये उपलब्ध नहीं है। वनों के क्षय से जनजातियों और आदिवासियों का जीवन प्रत्यक्ष रूप से तथा बाकि लोगों का अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होता है क्योंकि भारत में जनजातियों की पूरी जीवन शैली वनों पर आश्रित है । बदलते परिवेश में पर्यावरण प्रदूषण एक चिंता का विषय बनता जा रहा है और इसका अत्यधिक प्रभाव शहरों में अधिक देखने को मिलता है इसलिए वनों का महत्व अब शहरी लोगों को भी पता लगने लगा है ।उन्होंने आगे कहा कि हम सौभाग्यशाली है कि व्वसाय के साथ-साथ हमारा कार्य भी प्रकृति से जुड़े हुए है और हम राष्ट्र की समृद्धि में कहीं-न-कहीं अपना योगदान दे रहे है ।उन्होंने आशा व्यक्त की कि जिस **निर्वचन केंद्र** का आज यहाँ लोकार्पण किया गया है उस से हिमाचल प्रदेश के हितधारकों को अवश्य ही लाभ मिलेगा तथा इस केंद्र के माध्यम से वानिकी के क्षेत्र में इजाद की जा रही नई-नई तकनीकों से हितधारकों को समय-समय पर अवगत करवाया जायेगा ।उन्होंने हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान को स्थापित करने के लिए भूमि उपलब्ध करवाने के हिमाचल प्रदेश सरकार, विशेषकर हिमाचल प्रदेश वन विभाग का धन्यवाद करते हुए कहा कि इस की प्रगति के में हिमाचल प्रदेश वन विभाग एक महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है ॥

उन्होंने अंत में कहा कि वानिकी अनुसन्धान एक ऐसा क्षेत्र है जिस ओरे पिछले कुछ समय में हमारे देश में अधिक ध्यान नहीं दिया जाता था परन्तु बदलते परिवेश में पर्यावरण संरक्षण की ओरे सरकार की चिंताएं बढ़ी है तथा विश्व के अन्य देशों के साथ-साथ भारत में भी इस ओर अधिक ध्यान दिया जा रहा है, जो एक बहुत ही हर्ष का विषय है ।इसलिए वर्तमान समय एवं कार्यप्रणाली को देखते हुए हम सभी का कर्तव्य भी है कि हम *वानिकी अनुसन्धान* के क्षेत्र में बेहतर कार्य करें जिससे समाज की भलाई में कहीं-न-कहीं हम भी भागीदार बनें ॥

अपनी यात्रा के अंतिम चरण में दिनांक 24 सितम्बर 2015 को **डॉ. अश्वनी कुमार ने** डॉ. यशवंत सिंह परमार बागवानी एवं वानिकी विश्विद्यालय, नौणी, सोलन का दौरा किया तथा वहां के उप-कुलपति, डॉ. विजय ठाकुर तथा विश्विद्यालय के वैज्ञानिकों तथा प्राध्यापकों से हिमाचल प्रदेश में किये जा रहे *वानिकी अनुसन्धान* से सम्बंधित कार्यों तथा *भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्* तथा इसके क्षेत्रीय संस्थान, यू. एच. ऍफ़. के साथ किस तरह सहयोग कर सकते है, के बारे में विस्तार से चर्चा की ॥

महानिदेशक, *भारतीय वानिकी अनुसन्धान एवं शिक्षा परिषद्* के हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला के दौरेकी झलकियाँ

मीडिया कवरेज

भारतीय वानिकी अनुसंधान व शिक्षा परिषद की टीम पहुंची

हिमाचल दस्तक ब्यूरो। शिमला

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद की टीम हिमाचल पहुंच गई है। परिषद के महानिदेशक डॉ. अश्वनी कुमार अपने तीन दिवसीय हिमाचल प्रदेश के दौरे पर हैं। मंगलवार को प्रदेश सरकार तथा हिमाचल प्रदेश वन विभाग के अधिकारियों से वानिकी अनुसंधान के विषय पर महत्वपूर्ण चर्चा की। डॉ. अश्वनी कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद जो राष्ट्रीय वानिकी अनुसंधान तंत्र में एक शीर्ष संस्था है, वानिकी के सभी पहलुओं पर अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार की आवश्यकता आधारित आयोजन, प्रोत्साहन, संचालन एवं समन्वयन करके वानिकी अनुसंधान का वास्तविक विकास कर रही है। उन्होंने कहा कि परिषद जलवायु परिवर्तन, जैव-विविधता का संरक्षण, रेगिस्तानीकरण को रोकने के लिए परिषद हरसंभव प्रयास कर रही है। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के वैज्ञानिकों, अधिकारियों तथा कर्मचारियों से रूबरू होते हुए डॉ. अश्वनी कुमार ने कहा कि परिषद में कार्यरत सभी वैज्ञानिकों का कर्तव्य है कि हम ऐसी अनुसंधान परियोजनाएं बनाएं जो सीधे तौर पर हितधारकों से संबंधित हो।

जनहित व् देशहित के लिए शोधकार्य करें वैज्ञानिक

परिषद के महानिदेशक डॉ अश्वनी कुमार एचएफआरआई के दौरे पर

भास्कर न्यूज | शिमला

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के महानिदेशक डॉ अश्वनी कुमार का कहना है कि परिषद में कार्यरत सभी वैज्ञानिकों का कर्तव्य है कि हम ऐसी अनुसंधान परियोजनाएं बनाएं जो सीधे तौर पर हित धारकों से संबंधित हो, वैज्ञानिक केवल मात्र अपनी अकादमिक रुचि की परियोजनाओं पर ही अपना ध्यान केंद्रित न करें, क्योंकि सरकारी कर्मचारी होने के नाते असल में हमारा प्रत्येक कार्य व्यापक जनहित एवं देश हित में ही होना चाहिए। डॉ अश्वनी कुमार इन दिनों हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के दौरे पर हैं। महानिदेशक के शिमला आने पर हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक, डॉ वीपी तिवारी ने डॉ अश्वनी कुमार का स्वागत किया तथा आशा प्रकट की उनकी इस यात्रा से हिमाचल प्रदेश को लाभ मिलेगा तथा वानिकी अनुसंधान को नई दिशा मिलेगी। शिमला दौरे के दौरान डॉ अश्वनी कुमार परिषद के शिमला स्थित हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान का निरीक्षण करेंगे और संस्थान द्वारा वानिकी के क्षेत्र में चलाई जा रही विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं का अवलोकन भी करेंगे।

निर्वचन केंद्र का करेंगे लोकार्पण: डॉ अश्वनी कुमार सरकार और हिमाचल प्रदेश वन विभाग के अधिकारियों से भी वानिकी विशेषकर वानिकी अनुसंधान के विषय पर महत्वपूर्ण वार्तालाप करेंगे। इस दौरान वे हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान की ओर से स्थापित किए गए निर्वचन केंद्र का भी लोकार्पण करेंगे। इस केंद्र के माध्यम से भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद तथा हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में किये गए विभिन्न अनुसंधान कार्यों तथा इन से संबंधित प्रकाशनों को हित धारकों के लाभ के लिए प्रदर्शित किये जायेगा।

जनहित में अनुसंधान करें वैज्ञानिक

वानिकी अनुसंधान देहरादून के महानिदेशक का आह्वान

दिव्य हिमाचल ब्यूरो, शिमला

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के महानिदेशक डा. अश्वनी कुमार तीन दिवसीय हिमाचल के दौरे पर हैं। अपने दौरे के दौरान डा. अश्वनी कुमार परिषद के शिमला स्थित हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान का निरीक्षण करेंगे और संस्थान द्वारा वानिकी के क्षेत्र में चलाई जा रही विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं का अवलोकन भी करेंगे। इसके अतिरिक्त डा. अश्वनी कुमार प्रदेश सरकार और हिमाचल प्रदेश वन विभाग के अधिकारियों से भी वानिकी विशेषकर वानिकी अनुसंधान के विषय पर महत्वपूर्ण वार्तालाप करेंगे। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद किस तरह से वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में हिमाचल प्रदेश वन विभाग की सहायता कर सकता है, इस पर भी विचार-विमर्श किया किया जाएगा। डा. अश्वनी कुमार हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा स्थापित किए गए निर्वाचन केंद्र का भी लोकार्पण करेंगे।

इस केंद्र के माध्यम से भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद तथा हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान द्वारा वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में किए गए विभिन्न अनुसंधान कार्यों तथा इन से संबंधित प्रकाशनों को हितधारकों के लाभ के लिए प्रदर्शित किया

अनुसंधान के निर्वाचन केंद्र का करेंगे लोकार्पण

जाएगा। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों से रू ब रू होते हुए डा. अश्वनी कुमार ने कहा कि सभी वैज्ञानिकों का कर्तव्य है कि वे ऐसी अनुसंधान परियोजनाए बनाएं, जो सीधे तौर पर हितधारकों से संबंधित हों। वैज्ञानिक केवल मात्र अपनी अकादमिक रुचि की परियोजनाओं पर ही अपना ध्यान केंद्रित न करें। इससे पूर्व हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के निदेशक डा. वीपी तिवारी ने डा. अश्वनी कुमार का स्वागत किया।

पंथाघाटी में खुला इंटरप्रेटिशन सेंटर

हिमाचल दस्तक ब्यूरो। शिमला

भारतीय वन अनुसंधान संस्थान के अंतर्गत हिमालयन वन अनुसंधान केंद्र पंथाघाटी में इंटरप्रेटिशन सेंटर का लोकार्पण भारतीय वन अनुसंधान संस्थान के महानिदेशक डॉ. अश्वनी कुमार ने बुधवार को किया। डॉ. अश्वनी कुमार ने कहा कि भारत में वानिकी एक प्रमुख ग्रामीण आर्थिक क्रिया एवं जनजातीय लोगों के जीवन से जुड़ा एक महत्वपूर्ण पहलू है। जो एक ज्वलंत पर्यावरणीय और सामाजिक-राजनीतिक मुद्दा होने के साथ ही पर्यावरणीय प्रबंधन और धारणीय विकास के लिए अवसर उपलब्ध करने वाला क्षेत्र भी है। आर्थिक योगदान के अलावा वन संसाधनों का महत्व इसलिए भी है कि ये हमें बहुत से प्राकृतिक सुविधाएं प्रदान करते हैं। डॉ. अश्वनी कुमार ने कहा कि शिमला में इंटरप्रेटिशन सेंटर खुलने से हिमाचल प्रदेश के हितधारकों को लाभ मिलेगा तथा इस केंद्र के माध्यम से वानिकी के क्षेत्र में इजाद की जा रही नई-नई तकनीकों से हितधारकों को समय-समय पर अवगत करवाया जाएगा। उन्होंने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान को स्थापित करने के लिए भूमि उपलब्ध करवाने के हिमाचल प्रदेश सरकार व वन विभाग का आभार व्यक्त किया है। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के समूह समन्वयक डॉ. कुलराज सिंह कपूर ने बताया कि बुधवार को डॉ. अश्वनी कुमार डॉ. यशवंत सिंह परमार बागवानी एवं वानिकी विवि नौणी का दौरा करेंगे।

वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में हो बेहतर कार्य

एचएफआरआई पंथाघाटी में डॉ. अश्वनी कुमार ने किया निर्वचन क्षेत्र का लोकार्पण

सिटी रिपोर्टर | शिमला

वानिकी के क्षेत्र में नई तकनीकों का मिलेगा फायदा

पंथाघाटी के एचएफआरआई में निर्वचन केंद्र के लोकार्पण से हिमाचल प्रदेश के हित धारकों को अवश्य ही लाभ मिलेगा तथा इस केंद्र के माध्यम से वानिकी के क्षेत्र में इजाद की जा रही नई-नई तकनीकों से हित धारकों को समय-समय पर अवगत करवाया जाएगा। जिससे हिमाचल प्रदेश में विकास के साथ साथ पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखने में सहायता मिलेगी। इस अवसर पर हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी तथा आस-पास के गांव के प्रगतिशील किसान भी उपस्थित रहे।

वर्तमान समय एवं कार्यप्रणाली को देखते हुए सभी का कर्तव्य है कि हम वानिकी अनुसंधान के क्षेत्र में बेहतर कार्य करें। जिससे समाज की भलाई में कहीं न कहीं हम भी भागीदार बनें। यह कहना है भारतीय वन सेवा के महानिदेशक डा अश्वनी कुमार का। वह पंथाघाटी में हिमालयन वन अनुसंधान में निर्वचन केंद्र के लोकार्पण के अवसर पर बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि वानिकी अनुसंधान एक ऐसा क्षेत्र है, जिस ओर पिछले कुछ समय में हमारे देश में अधिक ध्यान नहीं दिया जाता था, परन्तु बदलते परिवेश में पर्यावरण संरक्षण की ओरे सरकार की चिंताएं बढ़ी है तथा विश्व के अन्य देशों के साथ-साथ भारत में भी इस ओर अधिक ध्यान दिया जा रहा है।

वनों का कृत्रिम विकल्प नहीं: अश्वनी कुमार ने कहा कि वनों का कोई कृत्रिम विकल्प भी इतनी बड़ी जनसंख्या के लिए उपलब्ध नहीं है। इसलिए वनों को संरक्षित करने में प्रत्येक व्यक्ति को अपनी भूमिका निभानी चाहिए। उन्होंने कहा कि भारत में वानिकी एक प्रमुख ग्रामीण आर्थिक क्रिया, जनजातीय लोगों के जीवन से जुड़ा एक महत्वपूर्ण पहलू है और एक ज्वलंत पर्यावरणीय और सामाजिक, राजनैतिक मुद्दा होने के साथ ही पर्यावरणीय प्रबंधन और धारणीय विकास हेतु अवसर उपलब्ध करने वाला क्षेत्र भी है। आर्थिक योगदान के अलावा वन संसाधनों का महत्व इसलिए भी है कि ये हमें बहुत से प्राकृतिक सुविधाएं प्रदान करते हैं।

निर्वचन केंद्र का लोकार्पण

शिमला, 23 सितम्बर (स.ह.): हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के निर्वचन केंद्र का लोकार्पण किया गया। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के महानिदेशक डा.अश्वनी कुमार ने अपने दौरे के दूसरे दिन बुधवार को हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, पंथाघाटी व शिमला में निर्वचन केंद्र का लोकार्पण किया। इस अवसर पर हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी तथा आसपास गांवों के प्रगतिशील किसान भी उपस्थित रहे।

पंजाब केसरी ई पेपर Thu, 24 September 2015
epaper.punjabkesari.in/c/6